आज़ादी का अमृत महोत्सव

पंचतीर्थ

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

पंचतीर्थ

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

ऐसा पवित्र स्थान जहां जाकर हमारे अंदर पवित्रता का संचार हो और हमारा जीवन निर्मल हो जाये, ‘तीर्थ’ कहलाता है।

श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत ने बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के जीवन एवं कार्य से जुड़े स्थलों को पंचतीर्थ की संज्ञा देकर हमें हमारे शलाका पुरुषों के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण स्थानों को एक नई दृष्टि से देखने तथा उन्हें संजोकर रखने की प्रेरणा दी है।

यह पंचतीर्थ हैं :

जन्मभूमि
महू, इन्दौर, मध्य प्रदेश

शिक्षा भूमि
लंदन में शिक्षा के दौरान निवास

दीक्षा भूमि
नागपुर, बौद्ध धम्म को अपनाने का स्थान

महापरिनिर्वाण भूमि
दिल्ली निर्वाण स्थल, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली

चैत्य भूमि
मुम्बई दादर विश्राम-स्थल जहां उनका अंतिम संस्कार हुआ

डॉ.भीमराव अम्बेडकर को श्रद्धा सुमन अर्पित करते
श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत

१.

जन्मभूमि - महू, इन्दौर

सभी के जीवन में जन्मस्थान का बहुत महत्व होता है। लेकिन कुछ स्थान ऐसे होते हैं, जो महान व्यक्तियों के जन्म लेने से पावन हो जाते हैं, पवित्र हो जाते हैं।
बाबासाहेब अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को महू में हुआ था। डॉ. अम्बेडकर के पिता श्री राम जी मालो जी सकपाल ब्रिटिश फौज की महार रेजिमेंट में सूबेदार मेजर थे। उनका जन्म एक सैन्य छावनी में हुआ जहां उनके पिता का निवास स्थान था। यह स्थान महू के काली पट्टन क्षेत्र में महू-मण्डलेश्वर राजमार्ग पर इन्दौर से मुम्बई की दिशा में अवस्थित है।

इसी स्थान पर बाबासाहेब की 100वीं जयंती पर 14 अप्रैल, 1991 को एक बौद्ध स्तूप के आकार का भव्य स्मारक बनाया गया। वास्तुकार श्री ई.डी. निमगड़े द्वारा अभिकल्पित यह स्मारक 4.52 एकड़ में फैला श्वेत पत्थर से बना वास्तुकला का अद्भुत नमूना है। प्रतिवर्ष करोड़ों की संख्या में डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी, बौद्ध धर्म (धम्म) के अनुयायी और

पर्यटक महू स्थित इस जन्मभूमि स्मारक पर पंहुचते हैं और श्रद्धा, उत्साह और उल्लास से डॉ. अम्बेडकर का स्मरण करते हैं। इसमें बाबासाहेब के जीवन का इतिहास छायाचित्रों के रूप में तो जीवंत है ही साथ ही उनकी विशाल प्रतिमा वहां उनकी उपस्थिति का अहसास कराती है।

14 अप्रैल, 2016 को श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत ने भीम जन्मभूमि जाकर डॉ. अम्बेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित की और ''पंचतीर्थों'' की संकल्पना राष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत की। 6 दिसम्बर, 2021 को माननीय प्रधानमंत्री जी ने भीम जन्मभूमि को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया।

यह जन्मभूमि आज समूचे विश्व के लिये आस्था स्थली बन गई है।

समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने के लिए किया गया बाबा अम्बेडकर का संघर्ष हर पीढ़ी के लिए एक मिसाल बना रहेगा।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

२.
शिक्षा भूमि - अम्बेडकर भवन - लंदन

शिक्षा किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास का आवश्यक अंग है। विपरीत परिस्थितियों से उबरकर श्रेष्ठतम शिक्षा प्राप्त करना और उसका उपयोग देश के कल्याण के लिये करना प्रेरणादायी है। इस दृष्टि से वह स्थान जहां बाबासाहेब ने उच्चशिक्षा ग्रहण की, हम सबके लिये प्रेरणादायी है।

'शिक्षा भूमि' उत्तरी लंदन का वह घर है जहां डॉ. अम्बेडकर लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में उच्च अध्ययन हेतु 1921-22 में रहे। यह 10, किंग हेनरी रोड पर स्थित एक चार-मंजिला भवन है जिसे महाराष्ट्र शासन ने लगभग 40 करोड़ रुपये में खरीदा। 1991 में यह भवन ब्रिटिश धरोहर घोषित किया गया और इस पर लिखा गया: "डॉ. भीमराव राम जी अम्बेडकर 1891-1956, सामाजिक न्याय के भारतीय योद्धा यहां रहते थे।"

ब्रिटेन में ऐसा सम्मान पाने वाले एकमात्र भारतीय होने का श्रेय डॉ. अम्बेडकर को प्राप्त है जिनकी स्मृति में लंदन का एक पूर्ण आवास-राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया गया है। इस भवन में डॉ. अम्बेडकर के चित्र, पत्र, पुस्तकें व अन्य सामान हैं और उनके कथन दीवारों पर उल्लिखित हैं।

8

श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत ने 14 नवंबर, 2015 को लंदन में डॉ. अम्बेडकर स्मारक का उद्घाटन किया। माननीय प्रधानमंत्री की प्रेरणा से इसे संग्रहालय का रूप दिया गया और इसकी साज-सज्जा को संग्रहालय के अनुकूल बनाया गया। माननीय प्रधानमंत्री जी का दृष्टिकोण इस स्थान को एक ऐसे स्थल के रूप में विकसित करना है जहां पर समूचे विश्व के लोग भारत की आर्थिक सोच को अनुभव करने व जानने आ सकें। बाबासाहेब के अर्थशास्त्री स्वरूप को प्रदर्शित करने वाला यह स्मारक सभी भारतवासियों के लिये प्रेरणा स्थल है।

AMBEDKAR

"अम्बेडकर का मानना था कि जीवन की परेशानियों को शिक्षा के माध्यम से दूर किया जा सकता है। उन्होंने किसानों एवं श्रमिकों के कल्याण पर जोर दिया। विशिष्ट आर्थिक चिंतन वाले डॉ अम्बेडकर शिक्षा की ताकत में विश्वास करते थे।"

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

३.

दीक्षा भूमि - नागपुर

दीक्षा हम सबके जीवन का वह अवसर है जहां से हमारा जीवन दिशा प्राप्त करता है, ध्येय प्राप्त करता है। सामाजिक न्याय और समानता के लिये अपने जीवन को समर्पित करने के बाबासाहेब के जीवनव्रत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव दीक्षा प्राप्त करना था। 'दीक्षा भूमि' वह भूमि है जहां बाबासाहेब ने बौद्ध धर्म (धम्म) की दीक्षा प्राप्त की।

नागपुर शहर में चार एकड़ भूमि पर दीक्षा भूमि स्थित है जहां बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर, 1956 को लगभग 6,00,000 अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म (धम्म) ग्रहण किया। इस तरह नागपुर से नव बौद्ध आंदोलन का सूत्रपात हुआ। यह स्थल भारत का एक प्रमुख बौद्ध तीर्थ बन गया।

दीक्षा भूमि पर बनाया गया गुम्बद 120 फुट ऊंचा और लगभग इतना ही चौड़ा है। इसके बीचो-बीच गौतम बुद्ध की सुंदर प्रतिमा है। दीक्षा भूमि के प्रांगण में संविधान की एक मूल प्रतिलिपि भी रखी गयी है।

दीक्षा भूमि सामाजिक परिवर्तन, वैचारिक क्रांति और भावात्मक समर्पण की पुण्यस्थली है। करोड़ों नव बौद्धों के लिये एक ऐसा आस्था का स्थान है जहां से समाज और देश के प्रति सतत् कार्य करते रहने की ऊर्जा मिलती है।

14 अप्रैल, 2017 को श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत ने बाबासाहेब की 124 वीं जयंती के अवसर पर दीक्षा भूमि जाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किये हैं। माननीय प्रधानमंत्री का 'सबका साथ सबका विकास' का संकल्प दीक्षा भूमि से अभिप्रेरित संकल्प है। समाज के अंतिम व्यक्ति तक देश के विकास का स्वप्न पहुंचे तथा उसकी हिस्सेदारी उसमें सनिश्चित हो, हम सब करोड़ों देशवासियों के लिये दीक्षा भूमि एक पुण्यस्थली है।

यह उनके लिये एक ऐसी प्रेरणास्थली है जो सामाजिक परिवर्तन/क्रांति का मार्ग दिखाती है। नव बौद्ध पंथ के उद्गम स्थल के रूप में दीक्षा भूमि देश-विदेश के बौद्धों, अम्बेडकर के अनुयायियों और पर्यटकों के लिए ज्ञान, कर्म व पुण्य का सम्मिश्रण प्रस्तुत करती है।

"डॉ अम्बेडकर ने संविधान के माध्यम से समाज को एकसूत्र में पिरोया।"

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

४.
महापरिनिर्वाण भूमि दिल्ली

व्यक्ति कितना भी महान हो जीवन मरण के बंधन से बंधा ही है। बहुत कम लोग इस दुनिया में ऐसे होते हैं जो लौकिक अर्थों में भले ही इस दुनिया से विदा हो जायें लेकिन अपने कार्यों से और अपने व्यक्तित्व के आलोक से अजर-अमर हो जाते हैं। बाबासाहेब अम्बेडकर एक ऐसे ही महामानव थे। महापरिनिर्वाण भूमि दिल्ली का वह स्थल है जहां 6 दिसम्बर, 1956 को बाबासाहेब ने अपने जीवन की अंतिम सांस ली और महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुये।

13 अप्रैल, 2018 को डॉ. अम्बेडकर जयंती की पूर्व संध्या पर श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत ने दिल्ली में 26, अलीपुर रोड स्थित डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय स्मारक का उद्घाटन किया। यह राष्ट्रीय स्मारक एक खुली किताब (संविधान) के आकार में बना है। बगीचों व फव्वारों के साथ वास्तुशिल्प के एक चमत्कार के रूप में निर्मित यह स्मारक अपनी बनावट और साज-सज्जा के कारण आकर्षण का केन्द्र है। यह स्मारक डॉ. अम्बेडकर की 'जीवन एवं यात्रा' को सम्यक रूप में प्रदर्शित करता है तथा उनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक योगदान को स्मरण कराता है।

श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत ने कहा था कि बाबासाहेब को एक वर्ग विशेष तक सीमित करना उनके साथ एवं देश के साथ अन्याय है। उन्होंने समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए कार्य किया।

श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत ने प्रयास किया कि बाबासाहेब के जीवन दर्शन तथा उनकी कृति को भारत का जन-जन समझे और आत्मसात करे। उन्होंने बाबासाहेब के आदर्शों को आत्मसात करते हुये उनकी कल्पनाओं को कृति रूप में उभारा है। आज अगर भारत का हर व्यक्ति अपने आपको सशक्त और स्वावलंबी महसूस करता है तो उसके पीछे बाबासाहेब की प्रेरणा और श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत का संकल्प ही है। यह महापरिनिर्वाण भूमि हम सब भारतीयों के लिये सामाजिक समानता की संकल्प स्थली है।

"डॉ अम्बेडकर ने उन सभी लोगों के लिए आवाज उठाई जिन्हें अन्याय का सामना करना पड़ा।"

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

८.

चैत्य भूमि - मुम्बई

''चैत्य भूमि'' वह स्थान है जहां 6 दिसंबर, 1956 को बाबासाहेब को उनके परिनिर्वाणोपरांत दिल्ली से मुम्बई लाकर उनका अंतिम संस्कार किया गया था। यह स्थान पहले दादर चौपाटी के रूप में जाना जाता था। चैत्य भूमि डॉ. अम्बेडकर के जीवन से जुड़े स्थानों में से एक है। डॉ. अम्बेडकर के अंतिम संस्कार स्थल के ऊपर बनाया गया दो मंजिला भवन स्तूप के आकार का है। इसकी वास्तुकला बाबासाहेब के धार्मिक और दार्शनिक चिंतन से प्रेरित है। डॉ. अम्बेडकर की अस्थियां व मुख्य अवशेष, चैत्यभूमि में एक छोटे, वर्गाकार भूतल के कमरे में प्रतिस्थापित है। डॉ. अम्बेडकर और बुद्ध की मूर्तियां और चित्र भी हैं, जो फूलों से सुसज्जित है।

द्वितीय तल पर सफेद मार्बल का गुम्बंद है जो बौद्ध भिक्षुओं के लिए आश्रय गृह है। बौद्ध गुफाओं की तरह स्तूप बहुत सुंदर बना हुआ है और उसका स्वरूप बहुत ही सरल है। इस स्मारक का उद्घाटन डॉ. अम्बेडकर की पुत्रवधू श्रीमति मीराबाई यशवंतराव अम्बेडकर द्वारा 8 दिसम्बर, 1971 को किया गया था।

वर्ष 2015 में श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत के कर कमलों द्वारा इस स्मारक स्थल का भूमि पूजन हुआ। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जिस तरह बाबासाहेब के आदर्शों को अपनाते हैं, सभी देशवासियों को अपने ध्येय के प्रति समर्पित होने का मंत्र दिया है वह स्पंदन यहां प्राप्त होता है। यह समर्पण स्थल के रूप में हमारे जीवन को स्पंदित करता है।

“डॉ अम्बेडकर को कई कठिनाईयों
का सामना करना पड़ा, यहां तक कि
अपमान भी सहना पड़ा लेकिन उनमें
ऐसी स्थिति से निपटने की ताकत थी।”

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

डॉ. अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई दिल्ली

भारत के माननीय प्रधानमंत्री के कर कमलों द्वारा दिनांक 7 दिसम्बर, 2017 को डॉ. अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र, 15 जनपथ, नई दिल्ली का उद्घाटन हुआ। माननीय प्रधानमंत्री ने इस केन्द्र को सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के क्षेत्र में अध्ययन, अनुसंधान, विश्लेषण और नीति निर्माण हेतु 'उत्कृष्ट केन्द्र' के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की है। इस केन्द्र का मुख्य उदेश्य सम्यक और प्रामाणिक अनुसंधान द्वारा सामाजिक-राजनैतिक और आर्थिक असमानताओं को कम करना है।

इस आधुनिकतम केन्द्र का क्षेत्र दिल्ली के बीचो-बीच लगभग 3.25 एकड़ है और यह एक तीन मंजिला भवन है जिसमें प्रशासनिक ब्लॉक और अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस भवन के बाहर के हिस्से में अनेक प्रकार के हरे-भरे पौधे लगे हुए हैं जो इस स्थान की शोभा बढ़ाते हैं। भवन में डॉ. अम्बेडकर की 18 फुट ऊंची एक विशाल कांस्य प्रतिमा है। साथ ही, एक छोटा एम्फीथियेटर, दो चैत्य गुंबद, लाल पत्थर के दो तोरण द्वार, बुद्ध की प्रतिमा और इसके दाईं ओर अशोक स्तंभ है। गुम्बद के नीचे भू-तल पर एक बड़ा वर्गाकार क्षेत्र है, यहीं पर बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर की कुर्सी पर विराजमान प्रतिमा है।

"बाबा साहेब अम्बेडकर सिर्फ एक
समुदाय के लिए नहीं बल्कि पूरी
दुनिया के लिए एक प्रेरणा हैं।"

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

NOTES

NOTES

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

मै. संदीप प्रैस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

BOC / Hindi / April 2022